



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)

www.lgrlarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पपीते की उन्नत एवं प्रभावी खेती में अधिक मुनाफा

(*पुष्पेंद्र सिंह चौधरी एवं के. थम्पासना)

कृषि महाविद्यालय, शेखावाटी संस्थान (श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर से संबद्ध)

* 123swift16@gmilil.com

पपीता एक उपोष्ण कटिबंधीय एवं उष्ण जलवायु वाला फल है। पपीते का फल स्वाद में मीठा होने के साथ ही सेहत के लिए लाभकारी होता है। पपीते का फल औषधीय गुणों में भरपूर होने के साथ ही अधिक मुनाफे वाली फसल के रूप में जानी जाती है जिसके कारण क्षेत्रफल के दृष्टिकोण के आधार पर भारत में मुख्य रूप से उगाई जाने वाली पांच प्रकार के फलों वाली फसलों में से एक है। पपीता आकार में छोटा एवं कम समय में फल देने वाली फसल है अतः इसे दो फसलों के बीच उपस्थित अंतर फसल के आसानी से लगाया जा सकता है और पौधा रोपण के 8 - 10 माह में फल प्राप्त होने लगते हैं जिसकी बजह से किसानों का रुझान पपीते की खेती की तरफ बढ़ा है। पपीते में मिनरल, विटामिन, प्रोटीन, एनर्जी आयरन, कैल्शियम और मैग्नीशियम पाया जाता है जो शरीर को सेहतमंद बनाए रखने में सहायक होता है। पपीते में एंटी-बैक्टीरियल गुण मौजूद होते हैं जो हमारे डाइजेशन में मदद करते हैं। इसके साथ ही यह फूड पॉइजनिंग जैसी बीमारियों से लड़ने में भी हमारी मदद कर सकते हैं। पपीते को सिर्फ सेहत ही नहीं बल्कि स्किन के लिए भी फायदेमंद माना जाता है। यह देखा गया है कि किसान भाइयों को किस्मों की जानकारी के अभाव, पौधों के रोपण, कीटों एवं व्याधियों के रोकथाम में अधिक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है जिससे किसान भाइयों को आर्थिक रूप से लाभ नहीं मिल पाता।

जलवायु:

पपीता एक उष्णकटिबंधीय फल है हालांकि इसकी खेती समशीतोष्ण और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में भी की जा सकती है। पपीते की वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक आदर्श और अनुकूल तापमान 24-28 C है। सर्दियों के दौरान यदि रात का तापमान 12 डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है, तो इससे पाला पड़ सकता है, जो फूलों और फलों के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा जो अप्रत्यक्ष रूप से उपज को प्रभावित करता है।

भूमि:

पपीते की सफल खेती के लिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी, दोमट मिट्टी और उपजाऊ मिट्टी होनी चाहिए। पपीते की खेती के लिए मिट्टी का सबसे अच्छा पीएच 6.5-7.5 के बीच होता है।

किस्मों का चयन: पूसा डेलिसियस, ताइवान, पूसा मेजेस्टी, पूसा जॉयंट, पूसा इवार्फ, पूसा नन्हा, कुर्ग हनी ड्यू आदि भारत में पपीते की महत्वपूर्ण और आशाजनक किस्में हैं। किसान इन किस्मों को अपने खेत में उगा रहे हैं और पपीता का उत्पादन अधिकतम कर रहे हैं।

पपीते का प्रवर्धन:

पपीते में डाइसियस और गाइनोडायसियस दोनों प्रकार की किस्में होती हैं। लेकिन किसान को गाइनोडायसियस किस्म के बीज खरीदने चाहिए। पपीता मुख्य रूप से बीज से प्रवर्धन होता है। पपीते के 1 ग्राम बीज में 60-70 बीज होते हैं। पपीते की 1 हैक्टर में पौधे लगाने के लिए 2500 - 3000 पौध की आवश्यकता होती है। सामान्यतया इतने संख्या पौध प्राप्त करने के लिए 80 -100 gm गाइनोडायसियस बीज की आवश्यकता होती है।

पौधशाला की तैयारी:

पपीते को बीज द्वारा प्रचारित किया जाता है। अतः पपीते के बीज की बुआई से पहले फफूंदनाशी से उपचारित करने के बाद ही मिट्टी में रखना चाहिए। मुख्य रूप से थाइरम, कैप्टॉन एवं बाबिस्टीन इत्यादि फफूंदनाशी (2 -4 gm / kg) से उपचारित करने के बाद बुआई करनी चाहिये। जो की पौधों को कई प्रकार के कवकजनित रोगों से बचाव करता है और अधिक से अधिक अंकुरण में मदद करता है। बीज की बुआई करते समय बीज को 2 -4 cm गहराई एवं 15 -20 cm के अंतराल पर एक कतार में लगाना चाहिये। पपीते की पौधशाला मुख्य खेत में रोपाई से दो महीने पहले तैयार की जाती है। रोपाई से पहले पपीते के पौधे की ऊंचाई 15-20 सेमी होनी चाहिए।



पौध प्रतिरोपण और खेत की तैयारी:

मार्च-अप्रैल के महीने में ग्रीष्मकाल में खेत को तैयार कर गहरी जुताई कर देनी चाहिए। जल निकासी की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि पानी खेत में जमा न हो। यदि खेत में पानी रुक जाता है, तो पपीते के अंकुर को नुकसान होगा। गड्डों को 2 x 2 मीटर की दूरी पर बनाया जाता है और गड्डे का आकार 50x 50x50 सेमी होना चाहिए। यदि पपीते की बौनी किस्मो का चुनाव किया गया है तो दो पौधों के बीच 1.5x 1.5 मीटर की दूरी पर लगावे। पौध रोपण के तुरंत बाद हलकी सिंचाई करे



उर्वरक प्रबंधन:

संतुलित उर्वरकों की मात्रा एवं सड़ी हुई गोबर की खाद मृदा में नमी बनाये रखने में मदद करती है। खेत तैयार करते समय 15 - 20 टन सड़ी गोबर की खाद मृदा में मिलाये, और पौधा फलवार होते ही प्रति पौधा 250 - 300 ग्राम नाइट्रोजन, 200 - 250 ग्राम फॉस्फोरस एवं 400 - 500 ग्राम पोटैश पौधों के चारों ओर बने हुए थालों में मिट्टी में डालें। नाइट्रोजन की मात्रा तीन टुकड़ों में देनी चाहिये। फूलों को झड़ने

से रोकने के लिए एवं फलों के आकार को बढ़ाने के लिए उचित हार्मोन का छिड़काव करे जिससे उच्च गुणवत्ता युक्त फलों को तैयार किया जा सकता है।

पाले से पपीते की पौध एवं फलों पर प्रभाव:

सर्दियों के मौसम में पाले का फलों की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जब रात्रि तापमान 10 C से कम होने पे कई बार बगीचा खराब हो जाता है। अतः पौधों को समय रहते पाले से बचाव जरूरी है। नवंबर और दिसंबर माह के अंत में पाले का असर देखा जा सकता है इसके बचाव के लिए खेत के चारो ओर घास फूस जलाकर धुआं करना चाहिये, शाम के समय खेतों में सिंचाई करे एवं फलों को चारो तरफ से कपडो या टाट की सहायता से लपेट दे जिससे पाले का फलों और पौधों पर होने वाले असर को कम किया जा सकता है।



निराई गुड़ाई एवं विरलीकरण:

पौध रोपण के बाद विभिन्न प्रकार के खरपतवार उग आते है जो मुख्य पौधे के साथ नमी, पोषक तत्वों के लिए प्रतिस्पर्धा करते है जिससे पौधे में वृद्धि सही ढंग से नहीं हो पाती। इसके अलावा खरपतवार कई प्रकार के रोग एवं कीटों को आश्रय प्रदान करते है जो बाद में अनुकूल मौसम में रोगों को बढ़ावा देते है इसीलिए जब खरपतवार छोटे होने पर, खेतों से बहार निकाल दे कर जला देना चाहिये। फलों में उच्च गुणवत्ता बनाये रखने के लिए, यदि गुच्छों में फल हो तो, उन्हें निकाल दें जिससे दो फलों के प्रतिस्पर्धा कम होने पे गुणवत्ता एवं आकार बढ़ जाता है।

फलों की तुड़ाई एवं उपज:

पपीता एक क्लीमेट्रिक फल है जो मातृ पौधो से अलग करने के बाद पकता है। पपीता रोपण के लगभग 7 - 8 माह बाद फल लगना शुरू हो जाता है। फल लगने के 110 - 130 दिन बाद फल तुड़ाई अवस्था में होते है। फल तुड़ाई स्टेज में आने पे फलों का रंग शीर्ष भाग में हरे से हल्का पीला होने लगता है और नाखून से फल की सतह को खुरचने पे दूध के समान लेटेक्स निकलना बंद हो जाता है। फल के अंदर उपस्थित बीज के चारों ओर जेलीनुमा पदार्थ चिपका होता है। जिससे बीज चिपचिपे होते हैं। फलों के पकने पे फल मीठा हो जाता है। सामान्यतय यदि बाग को सही तरीके से प्रबंधन किया जाये तो प्रति पोधा 40 - 50 kg उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

पपीते में लगने वाले मुख्य रोग एवं कीट:

1) डम्पिंग ऑफ (आद्रगलन रोग):

यह एक महत्वपूर्ण रोग है जो आमतौर पर नर्सरी में देखी जाती है और यह रोग मुख्य रूप से पिथियम एफेनिडमैटम के कारण होती है। जो एक कवकजनित रोग है। यह मुख्य रूप से नर्सरी में नए अंकुरित पौध को प्रभावित करता है। यह मुख्य रूप से मिट्टी की सतह के पास के तने के हिस्से को प्रभावित करता है। कवक द्वारा प्रभावित भाग काले रंग में बदल जाता है और तना कमजोर हो जाता है प्रभावित पौधे हवा के चलने से टूटकर जमीं पर गिरने लगते है। जब इस रोग का संक्रमण अधिक होता है तो पौधशाला में लगी हुई सारी पौध खराब हो जाती है। इस रोग के नियंत्रण के लिए नर्सरी की मिट्टी को

formaldehyde दवा (2 .5 प्रतिशत घोल) से उपचारित करना चाहिये | जब भी पौधों पर इस रोग के लक्षण दिखाई दे तो रिडोमिल + मैकोजेब के 2 gm /लीटर की दर से पौधशाला में उपस्थित पौधों पर छिड़काव करना चाहिये |

2) मोज़ेक रोग:

यह रोग मुख्य रूप से वायरस द्वारा होता है लेकिन इसको पौधों में स्थान्तरित एफिड वाहक के द्वारा किया जाता है | यह पौधे की समस्त अवस्थाओं को प्रभावित करता है लेकिन संक्रमण की दर नए पौधों में अधिक देखा गया है | इस रोग से प्रभावित पौधे छोटे एवं पत्तियाँ छोटी होती है जिसके कारण फल आकार में छोटे होते है | एफिड एक रस चूसने वाला कीट है जो रस चुसण के दौरान वायरस को पौधों में डाल देता है और पौधा संक्रमित हो जाता है | इस रोग की रोकथाम के लिए पौधों में नीम की खली को पौधों के चारों ओर डालकर मिट्टी में दबा देना चाहिये | नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर छिड़काव करने से इस रोग को नियंत्रित किया जा सकता है | एफिड को रोकने के लिए इमिडाक्लोप्रिड का 1 ml /3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करे|



3) मिलीबग रोग:

पपीता में मिलीबग एक रस चुसण कीट है जो की पौधे के तना, पत्ती एवं फलों से रस चूसता है। मिलीबग एक पॉलीफेगस कीट है जिससे तना कमजोर हो जाता है और पत्तियाँ पीली पड़कर झड़ने लगती है जिससे पौधों में प्रकाश संश्लेषण की दर कम हो जाती है और जो फल बनते है वो आकार में छोटे होते है | फलों पर मिलीबग का संक्रमण होने से फल छोटे एवं टूटकर स्वतः ही गिर जाते है और किसानो को आर्थिक नुकसान होता है। मिलीबग का संक्रमण मार्च - अप्रैल एवं जुलाई - अगस्त में सर्वाधिक होता है। इस रोग की रोकथाम के लिए क्लोरपैरिफोस या इमिडाक्लोप्रिड या क्लोरपैरिफोस (30 EC) दवा का 2 ml प्रति लीटर पानी में मिक्स करके छिड़काव करे।

